

विचार बिन्दु

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। –हरिवंश राय बच्चन

मजबूत सरकार या मजबूर सरकार?

4 जून 2024 को लोकसभा चुनाव के परिणाम घोषित हो गए। सभी एग्जिट पोल के अनुमानों को गलत साबित करते हुए मतदाता ने अपनी परिपक्वता का प्रदर्शन किया एवं किसी भी एक दल को बहुमत के लिए आवश्यक 272 सीटों तक नहीं पहुंचाया। मत दल लोकसभा चुनावों 2014 और 2019 में भाजपा को अकेले क्रमशः 282 और 303 सीटें प्राप्त हुई थीं।

कहने को तो ये दोनों सरकारें, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन या एन डी ए की थीं, किंतु भाजपा द्वारा बहुमत से कहीं अधिक सीटें जीतने के कारण, वास्तविकता में 10 वर्षों में कभी ऐसा नहीं लगा कि सरकार, भारतीय जनता पार्टी की नहीं अपितु एन डी ए की थी। कभी-कभी तो ऐसा भी लगा जैसे सरकार न एनडीए की है ना बीजेपी की, अपितु सरकार तो केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की है। शायद यही कारण है कि सरकार को 'मोदी सरकार' के रूप में ही संबोधित किया जाता रहा। किसी भी मंत्रालय का कोई काम या निर्णय रहा हो, सब पर छाप केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की थी। हर समय और हर स्थान पर प्रधानमंत्री मोदी ही दिखाई देते थे, चाहे अक्सर अंतरिक्ष यान के प्रक्षेपण का हो, नौसेना के किसी जहाज के लोकार्पण का हो, अस्म में किसी बहुत बड़े पुल के लोकार्पण का हो, अथवा मैदान में 'भारत मंडपम्' के उद्घाटन का हो, वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर प्रारंभ करने का हो। न केवल यह, देश में कोरोना के 100 करोड़ टीके लगने के अक्सर पर भी देश में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रत्येक माध्यम और पेट्रोल पंपों के होर्डिंग तक पर केवल और केवल नरेंद्र मोदी ही छाप हुए थे। यहां तक कि कोरोना वैक्सीन के प्रमाण पत्र पर भी प्रधानमंत्री मोदी का ही चित्र अंकित था। उज्ज्वला गैस के वितरण के लिए धन्यवाद के लिए 'पेट्रोल पंपों पर लगाए गए होर्डिंग पर केवल प्रधानमंत्री मोदी का ही फोटो अंकित होता रहा।

स्पष्ट है, सरकार पर एकाधिकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ही था। शायद इसी कारण पार्टी के कार्यकर्ताओं एवं यहां तक कि राष्ट्रीय मीडिया द्वारा भी सरकार को प्रत्येक उपलब्धि के लिए व्यक्तिगत रूप से श्रेय प्रधानमंत्री को ही दिया गया। लोगों को यह तक पता नहीं था कि किस विभाग का मंत्री कौन है? काम चाहे किसी भी विभाग में किया हो, उसकी उपलब्धि का श्रेय स्वयं नरेंद्र मोदी जी ने ही लिया।

प्रधानमंत्री ने अपने भाषणों में बार-बार यह कहा कि उनकी सरकार एक 'मजबूत' सरकार है जबकि पहले कई वर्षों तक जो भी सरकार रही वे 'मजबूर' सरकार थीं। उनका संकेत विशेष रूप से मनमोहन सिंह के कार्यकाल की ओर था। उनका यह कहना सही भी था क्योंकि किसी भी एक दल को बहुमत से अधिक सीटें 1984 के बाद पहली बार प्राप्त हुई थीं। इस संदर्भ में 2024 के लोकसभा चुनाव के परिणाम का विश्लेषण उपयुक्त होगा।

इस चुनाव में आम मतदाता ने यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी एक व्यक्ति के हाथों में सत्ता का केंद्रीकरण रोकने में वह सक्षम है। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को बहुमत यानी 272 से बहुत कम अर्थात 240 सीटें प्राप्त हुईं। एनडीए गठबंधन को कुल मिलाकर 293 सीटें मिलीं।

अब तक एनडीए की सरकारें होते हुए भी भाजपा के सहयोगी दलों की भागीदारी मंत्रिमंडल में नाम मात्र की ही थी। जो भी मंत्रालय उन्हें दिए गए, उन्हें स्वीकार करने के अतिरिक्त उनके पास कोई विकल्प नहीं था। सहयोगी दलों को उपयुक्त सम्मान न मिलने का ही कारण रहा कि भाजपा के सहयोगी दल एक-एक कर उनसे अलग होते चले गए जैसे - शिवसेना, अकाली दल। यह ज्ञात नहीं है कि वह 10 सालों में एनडीए की बैठक कब हुई एवं कौन इसका संयोजक था? सरकार तकनीकी रूप से एनडीए की थी, किंतु सहयोगी दलों को लगभग महत्वहीन बना दिया गया था। देश 'एक दल - एक नेता' की दिशा में बढ़ रहा था। 2024 के चुनाव परिणाम ने इस स्थिति को एकदम बदलकर रख दिया है।

चुनाव प्रचार के दौरान भी सभी प्रचार सामग्री में केवल प्रधानमंत्री के ही चित्र का उपयोग किया था। यहां तक कि भाजपा के घोषणा पत्र को भी 'मोदी की गारंटी' के नाम से प्रचारित-प्रसारित किया गया। सभी सार्वजनिक सभाओं में एवं विभिन्न साक्षात्कारों में प्रधानमंत्री ने हर बार 'मोदी की गारंटी' का उल्लेख किया एवं एक प्रकार से उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदारी ली कि वह भारत को विकसित राष्ट्र बनाएंगे। 2024 के लोकसभा चुनाव में भारत के आम मतदाता ने अपनी ताकत का परिचय दिया और उसके द्वारा दिए गए जनसंदेश से यह स्पष्ट हुआ कि किसी एक दल का बहुमत नहीं होगा एवं बिना अन्य दलों के सहयोग के कोई भी सरकार नहीं बना पाएगा। इसी कारण, प्रधानमंत्री मोदी अब अपनी सरकार को 'मोदी सरकार' के बजाय एनडीए सरकार कहने पर मजबूर हैं।

राष्ट्रपति जी द्वारा 9 जून, 2024 को प्रधानमंत्री एवं 71 मंत्रियों को पद की शपथ दिला दी गई है। इनमें 30 केबिनेट मंत्री, 6 राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 35 राज्यमंत्री हैं। नई सरकार का गठन हो गया है और तीसरी बार प्रधानमंत्री के पद पर नरेंद्र मोदी स्वयं ही बैठे हैं। अब देशवासियों को यह जानने की उल्लेखनीय होगी कि नई सरकार मजबूत सरकार के रूप में चलाई जाएगी अथवा मजबूर सरकार बनकर रह जाएगी। उल्लेखनीय है कि 10 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी इच्छा अनुसार निर्णय लिए।

इस चुनाव में आम मतदाता ने यह सिद्ध कर दिया कि किसी भी एक व्यक्ति के हाथों में सत्ता का केंद्रीकरण रोकने में वह सक्षम है। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को बहुमत यानी 272 से बहुत कम अर्थात 240 सीटें प्राप्त हुईं। एनडीए गठबंधन को कुल मिलाकर 293 सीटें मिलीं।

ही यह 'अबकी बार 400 पार' का नारा दे दिया। यह भी कहा गया कि भाजपा स्वयं 370 सीटें जीतेगी। लोकसभा चुनाव परिणाम के आते ही यह स्वप्न टूट गया और भारतीय जनता पार्टी केवल 240 सीटों पर सिमट कर रह गई। यह विचित्र है कि भाजपा 240 सीटें प्राप्त करके उत्सव बना रही है और इंडिया गठबंधन भी 234 सीटें प्राप्त करके खुशी का अनुभव कर रहा है।

यह विडंबना ही है कि भारतीय जनता पार्टी को सरकार बनाने के लिए उन दलों का सहयोग लेना पड़ा है जिनकी विचारधारा कुछ महत्वपूर्ण मामलों में भाजपा से बिल्कुल अलग है। उदाहरण के लिए, प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा की कि मुसलमानों को किसी प्रकार का आरक्षण कटौत नहीं दिया जाएगा जबकि तेलुगु देशम पार्टी ने यह घोषणा कर दी है कि आंध्र प्रदेश में मुसलमानों को चार प्रतिशत आरक्षण यथावत जारी रहेगा। ऐसी सूरत में प्रधानमंत्री मोदी का क्या रुख रहेगा इस पर सब की नजर रहेगी। इसी प्रकार नीतीश कुमार पूरे देश में जातिगत जनगणना की मांग करते रहे हैं जबकि भारतीय जनता पार्टी इसके विरुद्ध रही है। यही बात यूनियनों सिविल कोड और एन आर सी पर भी लागू होगी। तेलुगु देशम पार्टी और जनता दल (यु) किसी भी सूरत में ऐसा कोई भी निर्णय लेने में सहमत नहीं होंगे जो अल्पसंख्यक समुदाय के विरुद्ध हो। क्या सरकार अपनी घोषणाओं को भुला देगी?

इन चुनाव परिणामों ने सिद्ध कर दिया है कि अब भारत में चुनाव, केवल धर्म के आधार पर धुवीकरण करने नहीं जाता जा सकता है। भाजपा ने यही गलती की और वे यह मान कर चले कि धर्म के आधार पर विभाजन करके वे बड़ा बहुमत प्राप्त कर लेंगे। शायद इसीलिए, मोदी ने भी अपने चुनाव प्रचार में धार्मिक धुवीकरण पर ही बल दिया। आश्चर्य है कि फैजाबाद लोकसभा की सीट, जिसके अंतर्गत अयोध्या भी स्थित है, जहां पर राम मंदिर निर्माण का भव्य आयोजन किया गया और जहां पर लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या हिंदुओं की है, वहां भी भारतीय जनता पार्टी का उम्मीदवार हार गया। संदेश स्पष्ट है कि अब जनता को आप धर्म के आधार पर वोट कर विजय प्राप्त नहीं कर सकते।

प्रधानमंत्री मोदी को अपने काम करने के तरीके में बदलाव लाना होगा और सबके साथ मिलजुल कर काम करने की भावना विकसित करनी होगी। यह संदेश भी साफ दिया है कि यदि कोई दल अथवा नेता तानाशाही प्रवृत्ति की ओर बढ़ेगा तो जनता उसे नकार देगी। यह देश के हित में भी है।

मजबूत सरकार का एक लाभ यह होता है कि वह कोई भी निर्णय बिना किसी विरोध के ले सकती है। अब तक प्रधानमंत्री ने अधिकांश निर्णय अपने ही स्तर पर लिए। अब न केवल भाजपा के सांसदों के साथ संवाद की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलेगा अपितु सहयोगी दलों से विचार-विमर्श की प्रक्रिया अधिक अपनाई जाएगी। देखना यह है कि वे अपनी मूल प्रवृत्ति से समझौता करते हुए अन्य दलों के साथ मिलकर कैसे सरकार चलाएंगे? उल्लेखनीय है कि उन्होंने गुजरात का मुख्यमंत्री रहते हुए भी संदेव भारी बहुमत वाली सरकार का 13 वर्ष तक नेतृत्व किया था। अब प्रधानमंत्री को विभिन्न उपलब्धियों का श्रेय सहयोगी दलों के प्रतिनिधियों को भी देना होगा। अब तक ऐसा देखा गया था कि प्रधानमंत्री जी को किसी भी चित्र में स्वयं के अलावा और किसी का भी सम्मिलित होना कतई पसंद नहीं था। गठबंधन के दलों के नेताओं को वे कैसे सम्मान देंगे, इसकी बानगी एनडीए का नेता चुनने वाली बैठक में देखी गई थी। सहयोगी दलों के नेताओं को यह सम्मान, अस्थायी था या वास्तव में उनकी सोच में फर्क पड़ा है, यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

एक और बात जो महत्वपूर्ण है, वह यह कि, अब तक मीडिया को भी सरकार के निर्णय लेने की प्रक्रिया के बारे में भनक नहीं लगती थी। अब, चूंकि कई सहयोगी दलों के प्रतिनिधि भी मंत्रिमंडल में शामिल होंगे एवं वे अनौपचारिक रूप से मीडिया के साथ संवाद करना प्रारंभ करेंगे, तो कई ऐसी बातें छनकर मीडिया तक आएंगी जो पिछले 10 वर्षों में नहीं आ पाती थीं। एक तरह से अच्छा ही है क्योंकि इससे सरकार के निर्णय में अधिक सामूहिकता आएगी और अधिक पारदर्शिता भी होगी।

दो वर्षों में गठबंधन सरकार का अनुभव तो यही है कि कई महत्वपूर्ण निर्णय लंबे समय तक नहीं हो पाए जिनसे कारण प्रशासकों को भी बड़ावा मिला और विकास की गतिविधि अवरुद्ध हुई। इस स्थिति को policy paralysis का नाम दिया गया था।

आशा की जानी चाहिए कि प्रधानमंत्री मोदी, अपने तीसरे कार्यकाल में गठबंधन के दलों के साथ सर्व सहमत विषयों, पर देश और देशवासियों के हित में, त्वरित गति से निर्णय लेंगे। संभव है, कुछ विवादोत्पन्न विषयों पर कार्यवाही कुछ समय के लिए स्थगित करनी पड़े। सरकार को आने वाले दिनों में कई महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेना होगा जैसे किसानों से संबंधित प्रकरण, अग्नि वीर योजना की समीक्षा। लोकसभा क्षेत्रों के पुनः सीमांकन हेतु इस प्रकार का फार्मुला बनाना होगा कि दक्षिणी राज्यों के प्रतिनिधित्व पर विचारी प्रभाव न पड़े। उल्लेखनीय है कि महिलाओं के लिए लोकसभा और विधानसभाओं में आरक्षण भी पुनर्समीकरण के बाद ही लागू हो पाएगा।

यह तो पवित्र्य ही बताएगा कि गठबंधन सरकार की मजबूरी के बावजूद प्रधानमंत्री कितनी मजबूती के साथ देशवासियों को तोत्र गति से विकास के पथ पर आगे बढ़ा पाएंगे। वे ऐसा कर पाएँ, उसके लिए अनेकानेक शुभकामनाएँ।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भागवत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

श्रुत पंचमी षट्खण्डागम - एक आगम ग्रंथ का उद्भव दिवस तीर्थंकर महावीर की वाणी लिपिबद्ध कर जन-जन तक पहुंचाने का महान दिन



भागचंद्र जैन मिश्रापुरा

आज से 1867 वर्ष पूर्व जेष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन भगवान महावीर के उपदेशों को श्रवण के आधार पर षट्खण्डागम ग्रंथ के रूप में लिपिबद्ध कर के वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया था। अतः आज के दिन को श्रुत पंचमी के नाम से जाना जाता है। यह दिवस जैन धर्मावलंबियों के लिए जन जन तक धर्म ज्ञान पहुंचाने का एक प्रयोजनीय दिन है। तीर्थंकरों के द्वारा केवलज्ञान प्राप्त उपरान्त, कुबेर द्वारा रचित समवशरण में विराजित देव, मनुष्य एवं तिर्यक गति के जीवों को प्रतिदिन पूर्वाह्न, मध्यह्न, अपराह्न एवं अर्धरात्रि में चार बार छह-छह घड़ी पर्यंत दिव्य ध्वनि, जिसमें सात सौ लघु भाषा और अठारह महा भाषा प्रस्फुटित होती है, के द्वारा उपदेश दिया जाता है। सभी जीव अपनी अपनी भाषा में दिव्य ध्वनि को समझ लेते हैं। भगवान महावीर की वाणी श्रुत रूप में रही, जो प्रथम गणधर इंद्रभूति गौतम शुभ होकर अंतिम केवली जम्बू स्वामी एवं अंतिम श्रुत केवली भद्रभाहू तक निरंतर प्रवाहमान होती रही। तदनन्तर वर्षों तक उनके उपदेश आचार्यों, मुनियों के द्वारा अंगों एवं पूर्व के ज्ञान के आधार पर श्रुत रूप में ही जनमानस में प्रचलित रहा। इन समय लिखित में कोई ग्रंथ नहीं था।

इस प्रकार 62 वर्ष में तीन केवली, 100 वर्ष में पाँच श्रुतकेवली, 183 वर्ष में 11 मुनि 11 अंग 10 पूर्व के धारी, 220 वर्ष में पाँच मुनि 11 अंग के धारी, 118 वर्ष में चार मुनि एक अंग के धारी हुए इस प्रकार भगवान महावीर के पश्चात 683 वर्ष तक अंगो का ज्ञान रहा और

श्रुतरूप में निरंतर जारी रहा। दीप से दीप जलाने की परंपरा चलती रही।

अंगों और पूर्व के शेष ज्ञान के लुप्त होने का आभास

एक अंगधारी आचार्य धरसेन जी विहार करते हुए सुराष्ट्र देश के गिरिनार के समीप उर्जथ-तगिरि की चन्द्रगुफा में पहुंचे। जब इन्हें अपने निर्मल ज्ञान से यह आभास हुआ कि उनकी आयु थोड़ी ही शेष रह गई है और चिंता हुई कि अवसर्पिणी काल के प्रभाव से श्रुतज्ञान का दिन प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। अंगों और पूर्व के शेष ज्ञान के भी लुप्त होने एवम कालांतर में शास्त्रों के घटते ज्ञान से चिंतित होकर कि महावीर की श्रुत परंपरा, बुद्धि के निरंतर ह्रास के कारण केवल सुनकर सीखने के आधार पर नहीं चल सकती। इस समय उनकी जो कुछ श्रुत प्राप्त है, उसका भी आज किसी को नहीं है, यदि वे अपना श्रुत दूसरे को नहीं दे सके तो यह भी उनके ही साथ समाप्त हो जायेगा। ऐसा विचार कर धरसेनचार्य जी ने देशेन्द्र नामक देश में वेणगतटाकपुर में निवास करने वाले महामहिमाशाली मुनियों के निकट ब्रह्मचारी के द्वारा पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने अपनी अल्प आयु शेष रहने के बारे में लिखा, साथ ही आग्रह किया कि हमारे श्रुतज्ञानरूप शास्त्र का व्युत्पन्न करने साथ ही समाप्त न हो जावे, उसके उक्त्यै तीक्ष्ण बुद्धि वाले श्रुत को ग्रहण और धारण करने में समर्थ हो यतीश्वरों को भेजना का आग्रह किया।

आचार्य धरसेन को स्वप्न में दो श्वेत वृषभ द्वारा वंदना :- मुनि संघ ने आचार्य धरसेन के श्रुतरक्षा सम्बंधी अधिप्राय को जानकर दो मुनियों को गिरिनार भेजा। दोनों मुनि सुवृद्धि (पुण्यदत्त), नरवाहन (भूतबलि) विद्याग्रहण करने में तथा उसका स्मरण रखने में समर्थ थे, अत्यंत विनयी तथा शीलवान थे। उनके देश, कुल और जाति शुद्ध थे और वे समस्त कलाओं में परांगत थे। जब वे दो मुनि गिरिनार की ओर जा रहे थे तब श्री धरसेनचार्य ने ऐसा शुभ स्वप्न देखा कि दो श्वेत वृषभ आकर उन्हें विनयपूर्वक वंदना कर रहे हैं। उस स्वप्न से उन्होंने जान लिया कि

आचार्य धरसेन को स्वप्न में दो श्वेत वृषभ द्वारा वंदना :- मुनि संघ ने आचार्य धरसेन के श्रुतरक्षा सम्बंधी अधिप्राय को जानकर दो मुनियों को गिरिनार भेजा। दोनों मुनि सुवृद्धि (पुण्यदत्त), नरवाहन (भूतबलि) विद्याग्रहण करने में तथा उसका स्मरण रखने में समर्थ थे, अत्यंत विनयी तथा शीलवान थे। उनके देश, कुल और जाति शुद्ध थे और वे समस्त कलाओं में परांगत थे। जब वे दो मुनि गिरिनार की ओर जा रहे थे तब श्री धरसेनचार्य ने ऐसा शुभ स्वप्न देखा कि दो श्वेत वृषभ आकर उन्हें विनयपूर्वक वंदना कर रहे हैं। उस स्वप्न से उन्होंने जान लिया कि

आचार्य धरसेन द्वारा अध्ययन प्रारंभ एवं नया नामकरण दोनों मुनियों ने गुरुदेव के समीप जाकर अपना सारा वृत्तान्त निवेदन किया, मुनियों को इसी कुशलता से गुरु

ने जान लिया कि सिद्धांत का अध्ययन करने के लिए वे योग्य पात्र हैं। दोनों मुनियों का अध्ययन अषाढ शुक्ल एकादशी के दिन पूर्ण हुआ, धरसेनचार्य जी ने दोनों को आचार्य पद प्रदान किया। इसी दिन वे दोनों भी मोक्षों मुनियों की पूजा की। एक मुनिराज के दांतों की विषमता दूर कर देवों ने उनके दांत को कुंदपुष्प के समान सुंदर करके उनका 'पुण्यदत्त' नामकरण किया तथा दूसरे मुनिराज को भी भूत जाति के देवों ने तुर्यवाद जयघोष, गंधमाला, धूप आदि से पूजा कर 'भूतबलि' नाम से घोषित किया।

अनन्तर श्री धरसेनचार्य ने विचार किया कि उनकी मृत्यु का समय निकट है। इन दोनों को संवत्सरा न हो, यह सोचकर वचनों द्वारा योग्य उपदेश देकर दूसरे ही दिन विहार कराया। नौ दिन बाद कुरीश्वर नाम में पहुंचे और श्रावण कृष्ण पंचमी को दोनों मुनिराजों ने वही साथ में चातुर्मास किया। चातुर्मास के बाद यहां से पुण्यदत्त मुनि वनवास देश को चले गए वहां पर जिनपालित श्रावण का जिन दीक्षा दी और भूतबलि मुनि मरुदेश में पहुंचकर ठहर गए। पुण्यदत्त मुनिराज जिनपालित को पढ़ाने के लिए और महाकर्मप्रकृति प्राभूत का छह खण्डों में उपसंहार करना चाहते थे अतः उन्होंने लिखना प्रारम्भ किया और जीवस्थानाधिकार नामक पहले खंड के आठ अनुयोग (अधिकार) द्वार में से पहले सतप्रकरण अधिकार के 177 सूत्रों की रचना की और शिष्य मुनि जिनपालित को आचार्य भूतबलि मुनि के पास अधिप्राय जानने के लिए भेजा कि वे इस कार्य के करने में सहमत हैं अथवा नहीं। इस रचना को देखकर भूतबलि मुनि बहुत खुश हुए और षट्खंडरूप आगम रचना का अधिप्राय जान लिया। स्वयं ने पाँच खण्डों में पूर्व सूत्रों सहित 6000 श्लोक प्रमाण 'द्रव्यप्रकृत्यादि' अधिकारों की रचना की। इसके पश्चात महावर्धन नामक छठे खण्ड में 4000 श्लोक प्रमाण लिखा।

आचार्य भूतबलि ने इस प्रकार षट्खण्डागम की रचना करके उन सूत्रों को पुस्तक बद्ध किया और ज्येष्ठ शुक्ल

आचार्य धरसेन द्वारा अध्ययन प्रारंभ एवं नया नामकरण दोनों मुनियों ने गुरुदेव के समीप जाकर अपना सारा वृत्तान्त निवेदन किया, मुनियों को इसी कुशलता से गुरु

पंचमी के दिन चतुर्विध संघ सहित कृतिकर्म पूर्वक महापूजा की। इसी पंचमी का नाम 'श्रुतपंचमी' नाम प्रसिद्ध हो गया तथा आकाश से देवों ने भी अनन्यगत बार पुण्यो की वृष्टि की एवं तीर्थ से लेकर लोग श्रुतपंचमी के दिन श्रुत की पूजा करते आ रहे हैं। भूतबलि जी मुनिराज ने जिनपालित को षट्खण्डागम ग्रन्थ देकर पुण्यदत्त मुनि के पास भेजा। उन्होंने अपने गुरु के चिन्तित कार्य को पूरा हुआ देखकर महान हर्ष किया और श्रुत के अनुराग से चतुर्विध संघ के मध्य महापूजा की। इस प्रकार 'षट्खण्डागम' नामक ग्रंथ की रचना हुई। षट्खण्डागम दिगम्बर साधु आचार्य धरसेन के द्वारा दिए गए आगम के मौखिक उपदेशों पर आधारित है। षट्खण्डागम (छः भागों वाला धर्मग्रंथ) दिगम्बर जैन संप्रदाय का सर्वोच्च और सबसे प्राचीन पवित्र जिनवाणी धर्मग्रंथ है।

जिनवाणी को आत्मसात करिना हम पूजा पाठ को धर्म की मात्र क्रिया समझ कर पंच परमेष्ठी का गुण गान करते हैं। जिनवाणी हमें ज्ञान देती है कि ज्ञान पूर्वक क्रिया ही फल प्रदायिका होती है। अतः पूजापाठों में समाहित अध्यात्म रुपी तत्व का शोधन करेंगे, तभी हम सच्चे अर्थों में जिनवाणी को आत्मसात कर सकते हैं। जैन धर्म में देव, शास्त्र एवं गुरु की पूजा का विशेष महत्व है। जैन धर्मावलंबी ऐदातिक देशना से लिपिबद्ध जिनवाणी की पूजा, आराधना करके शास्त्र भंडारों का उचित रखरखाव, देखभाल, सुरक्षा, आत्म कल्याण के उद्देश्य से स्वाध्याय करने का नियम लेकर शास्त्रों का धर्मरक्षार्थ सदुपयोग किया जा सकता है। पूर्व में भी हमारे असंख्यता धर्म ग्रंथों को विधर्मियों द्वारा अपने कब्जे में लिए गए हैं। अतः एव शास्त्रों का संरक्षण आवश्यक है। वर्तमान में धर्मग्रंथों को डिजिटल प्रारूप में भी रखा जा सकता है। धर्मग्रंथ ही जीवन नैया के खिंबरे हैं।

संकलन :- भागचंद्र जैन मिश्रापुरा, अध्यक्ष जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर

बनास व कोठारी नदियों में औद्योगिक इकाइयों द्वारा प्रदूषित काला पानी छोड़ा जाना जारी

जिम्मेदार विभागों की लापरवाही से काला पानी जमीनों को बंजर बना रहा है

भीलवाड़ा, (निर्स)। शहर के दोनों किनारों की ओर से गुजरने वाली बनास एवं कोठारी नदियों में प्रोसेस हाउसों के द्वारा प्रदूषित रसायनयुक्त काला पानी छोड़ा जा रहा है जो लगातार कई वर्षों से अनवरत जारी है। जिम्मेदार विभागों की लापरवाही के चलते यह काला पानी जमीनों को बंजर बनाने में कारगर साबित हो रहा है।

शिकायतों के बावजूद प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के जिम्मेदार अधिकारियों की उदासीन कार्यशैली से उन्हें काला पानी नजर नहीं आ रहा है, जबकि गुवारड़ी और मण्डपिया नाले से भी औद्योगिक इकाइयों द्वारा चोरी छिपे छोड़ा जा रहा प्रदूषित काला पानी सीधे बनास नदी में जाकर प्रदूषित कर रहा है। यही नहीं बीते लम्बे समय से चल रही इस कारगुजारी से बनास नदी के किनारे बसे दर्जनों गांवों-खेड़ों में जहां भूजल स्तर प्रदूषित होने से खेतों की जमीनें अनुपयोगी हो रही हैं, वहीं लोगों के सामने पेयजल संकट बना हुआ है। उधर आसपास के ग्रामीणों ने बताया कि औद्योगिक इकाइयों द्वारा चोरी छिपे रात के अंधेरे में इकाइयों का

गुवारड़ी और मण्डपिया नाले से भी औद्योगिक इकाइयों द्वारा चोरी छिपे छोड़ा जा रहा प्रदूषित काला पानी सीधे बनास नदी में जा रहा है

प्रदूषित पानी खुले में छोड़ दिया जाता है जो बहता हुआ गुवारड़ी व मण्डपिया नालों में जमा होता है तथा बाद में बनास नदी तक पहुंच जाता है। ग्रामीणों ने प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अधिकारियों पर मिलीभगत का आरोप लगाते हुये कहा कि कई बार अवगत कराने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं होने से इकाइयों से गंदे काले पानी की आवक नहीं थम रही है और नालों में रसायनयुक्त पानी की मौजूदगी फिर सामने नजर आ रही है। गौरतलब है कि जिले में औद्योगिक विकास के साथ साथ बीते लम्बे समय से गहराती काले पानी की समस्या से कोठारी एवं बनास नदी के समीप बसे दर्जनों गांवों के



प्रोसेस हाउसों के द्वारा प्रदूषित रसायनयुक्त काला पानी छोड़े जाने से बनास एवं कोठारी नदियां प्रदूषित हो रही हैं।

वाशिनटो को तमाम कोशिशों के बावजूद राहत नहीं मिल सकी, जबकि शहर में सैकड़ों औद्योगिक इकाइयों संचालित हैं जहां वायु और जल प्रदूषण की शिकायतें सामान्य

हो चुकी है। इनमें खासकर प्रोसेस हाउसों द्वारा काला पानी छोड़े जाने की शिकायतें सर्वाधिक हैं। उधर राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के जिम्मेदारों द्वारा पानी के नमूने लेकर

जांच के लिये भिजवाकर अपने दायित्वों की इतिश्री जरूर कर ली जाती है परन्तु अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाये जाने से जहां समस्या जस की तस बनी हुई है।

राशिफल मंगलवार 11 जून, 2024



पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत् 2081, आश्लेषा नक्षत्र रात्रि 11:39 तक, व्याघात योग सांय 4:47 तक, बालव करण सांय 5:28 तक, चन्द्रमारत्रि 11:37 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-वृष, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 11:39 तक है। कुमार योग और रवियोग रात्रि 11:39 से आरम्भ होगा। आज श्रुति पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:01 से 10:44 तक, लाभ-अमृत 10:44 से 2:09 तक, शुभ 3:51 से 5:34 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:16

मेष
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

धनु
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बन्ते कार्य बिगड़ सकते हैं।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संचालित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक कार्यों से अटक हुए कार्य बन्ने लेंगे। संचालित कोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बन्ने लेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बन्ने लेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों शीघ्रता/सुगमता से बन्ने लेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।